13 नीति के दोहे



रहीम

(जन्म : लगभग 1553 ई. : निधन : सन् 1626 ई.)

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीमखान खाना था। उनके पिता का नाम बैरमरबाँ था। जो अकबर के अभिभावक थे। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम की कार्यक्षमता और बुद्धिमत्ता से अकबर बहुत प्रभावित थे और इसीलिए उन्होंने रहीम को अपने दरबार का महामंत्री का सर्वोच्च पद प्रदान किया था। रहीम संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के विद्वान थे। दानी के रूप में बहु सुविख्यात है। जीवन के व्यावहारिक अनुभवों को उन्होंने अपनी 'सतसई' में व्यक्त किया है।

प्रथम दोहे में परहित की भावना, दूसरे दोहे में सही संबंध की रीत और सच्चा प्यार, तीसरे दोहे में छोटी चीज़ का महत्त्व, चौथे दोहे में सही दीनबंधु की बात की गई है। पाँचमें दोहे में कड़वे वचन बोलनेवाले की स्थिति का वर्णन है। छठवें दोहे में उत्तम व्यक्ति की प्रवृत्ति, सातवें दोहे में बिगड़ी हुई बात को छोड़ देने की, आठवें दोहे में धैर्य का महत्त्व तथा अंतिम दोहे में किसीसे माँगना नहीं चाहिए – इस बात को उद्धृत किया है।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, सम्पत्ति सुचहिं सुजान ॥1॥

कहिं रहीम सम्पत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥2॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि॥3॥

दीन सबनको लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय॥4॥

खीरा को मुँह काटिकै, मलियत नोन लगाय।
रहिमन करुए मुखन की, चहिए यही सजाय ॥5॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥6॥

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन बिगर दूध को, भथे न माखन होय॥7॥

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥8॥

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनसे पहिले वे मुएँ, जिन मुख निकसत नाहिं॥9॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

तरुवर वृक्ष **परकाज** दूसरों के काम **बिपत्ति** आपत्ति **मीत** प्यारा **लघु** छोटा **तरवारि** तलवार **दीन** गरीब **सम** समान **खीश** ककड़ी **करुण** करुए **भुजंग** साँप **बिगरी** बिगड़ी हुई **थोरे** थोड़े **निकसत** निकलना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) रहीम के अनुसार संपत्ति का महत्त्व क्या है ?

(2) छोटों का तिरस्कार क्यों नहीं करना चाहिए ?

(3) सुई का काम कौन नहीं कर सकता ?

(4) उत्तम प्रवृत्ति का क्या लक्षण हैं ?

(5) सीसे क्यों नहीं चाहिए ?

(6) माँगने के बारे में रहीम क्या कहते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) वृक्ष और सरोवर के उदाहरण से रहीम हमें क्या समझाते हैं ?

(2) रहीम कड़वे मुखवाली मनुष्य की प्रकृति को कैसे समझाते हैं ?

(3) 'लाख प्रयत्न करने पर बिगडी हुई बात नहीं बनती' - ऐसा रहीम किस उदाहरण से समजाते हैं ?

3. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।'

(2) चंदन विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजंग।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रहीम के दोहो में निष्पन्न नीतिविषयक बात को चुनकर सुवाच्य अक्षरों में लिखिए और स्पष्ट कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रहीम के अन्य दोहे का संग्रह कीजिए।

●